लियो स्ट्रास 1899–1973

DR.SHAKEEL HUSAIN

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

~~अध्ययन सामग्री निर्माण~~

डा शकील हुसैन

shakeelvns27@gmail.com

विभागाध्यक्ष राजनीति विज्ञान

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महिविद्यालय । दुर्ग छत्तीसगढ़ । नैक द्वारा A+ मूल्यांकित

1-शास्त्रीय राजनीतिक सिद्धान्त की पुनर्स्थापना

2- समकालीन लोकतंत्र की चुनौतियां

प्रमुख कार्य

DR SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

1- आन टॉयरमी 1948

2- व्हाट इज पोलिटिकल फिलासफी 1957

3- थाट्स आन मेकियावेली 1958

4- हिस्ट्री आफ पोलिटिकल फिलासाफी 1963

शास्त्रीय राजनीतिक सिद्धान्त की पुनर्स्थापना

लियो स्ट्रास का समय राजनीति विज्ञान में आधुनिकता का समय है इस समय राजनीति विज्ञान में व्यवहारवादी क्रांति अपनी उच्चतम अवस्था में थी डेविड

ईस्टन और उनके सहयोगियों ने यह साबित करने का प्रयत्न किया था कि राजनीतिक सिद्धांत का पतन हो गया है ।

DR.SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

राजनीतिक सिद्धांत के पतन नाम से कई किताबें भी लिखी गई जिनमें की सबसे बड़े योगदानकर्ता डेविड ईस्टन और निकोलो कोबां है। प्रत्यक्षवाद और व्यवहारवाद ने राजनीति को विज्ञान बनाने की एक अंधी दौड़ चालू कर दी थी जिसमें राजनीतिक दर्शन कहीं पीछे छूट गया था । यह मान लिया गया था कि राजनीतिक दर्शन से बीसवी शताब्दी के राजनीति विज्ञान का कोई भला नहीं होने वाला है। राजनीति को यदि उपयोगी विषय बनाना है तो इसमें प्राकृतिक विज्ञान की अध्ययन पद्धतियों को लेकर प्रत्यक्ष वादी शोध किए जाने चाहिए । यह समय राजनीतिक

सिद्धांत और राजनीतिक दर्शन के लिए बहुत ही कठिन था।क्योंकि एक और जहां प्रत्यक्ष वादी अनुभववादि और व्यवहारवादी , राजनीतिक सिद्धात को कपोल कल्पित मान रहे थे वहीं दूसरी तरफ कार्ल पापर जैसे सिद्धांत शास्त्री जो राजनीतिक सिद्धांतों में भरोसा तो रखते थे लेकिन वे राजनीति विज्ञान के महान दार्शनिकों प्लेटो हीगल और मार्क्स के दर्शन को फांसीवादी और खुले समाज का दुश्मन बता रहे थे । दूसरे शब्दों में उनके दर्शन को खारिज कर रहे थे । इन सब बातों का बहुत ही गहरा प्रभाव लियो स्ट्रास के दर्शन पर पड़ा और उन्होंने जो राजनीतिक शोध और कार्य किए वह राजनीतिक दर्शन को पुनः स्थापित करने वाले थे । उन्होंने मेकियावेली हाब्स लॉक और प्लेटो की रचनाओं को पुनरीक्षित किया । विशेषकर प्लेटो की रिपब्लिक की

DR.SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

महानता को फिर से स्थापित किया और कार्ल पापर के दृष्टिकोण को खारिज किया इसलिए स्ट्रास को राजनीतिक सिद्धात का उन्नायक माना जाता है । सट्रास के अनुसार मैक्यावली ने जिस प्रकार राजनीति से तात्विक नैतिक आदर्शों या सब्सटेंटिव मोरल आइडियाज को निकाल कर बाहर किया उसने राजनीतिक दर्शन में एक प्रकार की अनैतिकता स्थापित कर दी थी । हाब्स और लाक के दर्शन ने यद्यपि उदारवाद को मजबूत किया लेकिन इनका दर्शन भी एक संकीर्ण उदारवाद तक सीमित था । स्ट्रॉस ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ व्हाट इस पोलिटिकल फिलासफी में इस बात को स्थापित करने का प्रयत्न किया की परंपरागत राजनीतिक दर्शन आधुनिक राजनीति विज्ञान से इसलिए श्रेष्ठ है क्योंकि यह संपूर्ण राजनीतिक जीवन और

DR.SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

जीवन के संपूर्ण पक्षों की व्याख्या करता है प्लेटो और अरस्तू की महानता केवल इसलिए नहीं है कि उन्होंने बहुत महान दार्शनिक थे बल्कि इसलिए है कि उन्होंने राजनीतिक जीवन को को सामाजिक जीवन से श्रेष्ठ माना और नागरिक गतिविधियों को किसी भी अन्य गतिविधियों से ऊपर रखा । ग्रीक राजनीतिक दर्शन जीवन की संपूर्णता का दर्शन है केवल बौद्धिक व्यायाम नहीं है । इस प्रकार स्ट्रास ने परंपरागत राजनीतिक सिद्धांत की पुनर्व्याख्या की और राजनीतिक सिद्धांत को ऐसे दौर में पुनः स्थापित किया जब डेविड ईस्टन उनके सहयोगियों ने आधुनिक और अनुभवी के अध्ययनों से राजनीतिक दर्शन को एक प्रकार से स्थगित कर दिया था । ऐसे मे लियो स्ट्रास, माइकल ऑकशाट, और आइजा बर्लिन आदि को इस बात का

DR.SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

श्रेय जाता है कि उन्होंने बीसवीं शताब्दी के मध्य में जब राजनीतिक दर्शन पर चारों ओर से हमले हो रहे थे तब परंपरागत राजनीतिक सिद्धांत और राजनीतिक दर्शन का महत्व पुनः स्थापित किया ।

DR.SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

समकालीन लोकतंत्र की चुनौतियां

स्ट्रास के अनुसार समकालीन लोकतंत्र के समक्ष चुनौती केवल सोवियत रूस के साम्यवाद से नहीं है बल्कि उदारवादी लोकतंत्र के अंदर से भी है । उन्होंने सोवियत संघ के शासन मॉडल का गंभीरता से अध्ययन कर बताया कि सोवियत मॉडल के लोकतंत्र में जिसे

सोवियत संघ लोकतंत्र ही कहता है अनेक कठिनाइयां हैं । वह व्यक्ति के स्थान पर समूह संस्कृति स्थापना करता है और एक प्रकार से मध्यम वर्गीय चरित्र को पूरी तरह खारिज करता है। इसके अलावा लोगों की कार्य करने की शक्ति, सर्वहारा के नाम पर ही खत्म कर देता है क्योंकि लोगों को कुछ किए बिना ही कुछ मिलने लगता है । साम्यवाद में जो संकट और परेशानियां और एक मजबूत चुनौती उदारवादी लोकतंत्र के सामने प्रस्तुत की उससे निपटने के लिए उदारवादी लोकतंत्र ने स्वयं में ऐसे समझौते किए उदारवादी लोकतंत्र भी धीरे-धीरे एक समतावादी लोकतंत्र या ईगलिटेरियन डेमोक्रेसी में बदलने लगा सार्वजनिक शिक्षा सर्वव्यापी स्वास्थ्य प्रणाली श्रमिक सुधार कारखानों के प्रबंधन में सुधार सामूहिक निर्णय लोकतांत्रिक नेतृत्व

DR.SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

इत्यादि उपकरण केवल संगठन में सुधार के लिए या राजनीतिक सामाजिक सुधार के लिए विकसित नहीं किए गए थे , बल्कि यह साम्यवाद से उत्पन्न चुनौती का सामना करने के लिए दार्शनिक और व्यवहारिक उपाय भी थे । लेकिन इनके परिपालन में उदारवादी लोकतंत्र स्वतंत्रता समानता अधिकार न्याय आदि अपने पुरातन मूल्यों से कुछ दूर चला गया । जबकी परंपरागत लोकतंत्र वास्तव में समूह या सर्वहारा के विरुद्ध नहीं है किंतु इसमें किसी के ऊपर किसी को वरीयता देने का निषेध है । यह वरीयतावाद वास्तव में साम्यवाद की बीमारी है जिसने उदारवादी लोकतंत्र को दूषित कर दिया है । स्ट्रास चूंकी राजनीतिक दर्शन के उन्नायक हैं और परंपरागत राजनीतिक सिद्धांत की पुनर्स्थापना करने वाले हैं इसलिए 16 वी 17वीं शताब्दी

DR.SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

के उदारवाद और व्यक्तिवाद में किए गए सकारात्मक संशोधनों को उपयोगी मानते हुए भी दार्शनिक और वैचारिक दृष्टि से उसका अधिक समर्थन नहीं करते । उनके अनुसार समकालीन लोकतंत्र का संकट समूह की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के साथ-साथ राजनीतिक और नैतिक मूल्यों से उनका सामंजस्य स्थापित करने की है । जिसमें व्यावहारिकता के नामपर जो उपाए प्रस्तुत किए जाते हैं या तथाकथित वैज्ञानिकता को अपनाकर जो राजनीतिक सिद्धांत प्रस्तुत किए जाते हैं उससे इनका कोई भला नहीं होने वाला है । इसलिए स्ट्रास समकालीन लोकतंत्र के संकटों को दूर करने के लिए विश्वविद्यालय शिक्षा प्रणाली में राजनीतिक दर्शन, दर्शन और नैतिक दर्शन को पुनः स्थापित करने और अपने पुराने गौरवशाली दिनों की ऊंचाइयों तक ले

DR.SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

जाने की वकालत करते हैं । और यह तर्क देते हैं कि

दर्शन और नैतिक दर्शन के अध्ययन के बिना केवल

DR.SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

एक भीड़ तंत्र और जन पूंज समाज की स्थापना होगी

जिसमें पराए पन और अस्तित्ववादि संघर्षों के अलावा

कुछ हासिल ना होगा ।

संदर्भ :- स्ट्रास, गाबा, एडम्स एण्ड डायसन